# दंगल गर्ल बोली, रायपुर देखकर आंखें खुल गई

**पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान दंगल गर्ल बबीता फोगाट ने रायपुर और छत्तीसगढ़ के बारे में अपने अनुभव शेयर किए. पहली बार राज्य में आई बबीता छत्तीसगढ़ को काफी पिछड़ा हुआ राज्य मानकर आई थी. पर यहां उतरते ही उसकी आंखें खुल गईं. अंबिकापुर में जाकर पता चला कि खिलाड़ियों को किस तरह की सुविधाएं मिल रही हैं. अब यहां रायपुर में आकर उसने मेराथन देखी.**

इथोपियाई धाविका को टक्कर देता बच्चा

मैराथन के दौरान टीम नवभारत

## दो घंटे की मैराथन के पीछे पांच महीने की मेहनत

आईआईएम द्वारा आयोजित मिनी मैराथन तो दो घंटे में खत्म हो गई, लेकिन इसके पीछे पांच महीने की मेहनत थी. आईआईएम के 20 छात्रों की टीम 'प्रयास' ने आयोजन को सफल बनाने में दिन-रात एक किया. सबसे खास बात यह रही है कि टीम अपने उद्देश्यों पर खरी उतरी और लोगों को स्वच्छता का संदेश देने में कामयाब रही. आखिरी दो दिनों में टीम के सदस्यों ने एक झपकी तक नहीं ली. 3मैराथन की प्लानिंग सालभर पहले की गई थी. इसे अमलीजामा देने का काम अक्टूबर 2016 में शुरू किया गया. सबसे पहले 20 सदस्यों की एक कोर टीम और 10 से 15 सदस्यों की सहयोगी टीमें बनाई गईं. सहयोगी टीमों में ऑपरेशन, ऑनलाइन-ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन, स्पॉन्सरशिप, डिजाइन, गेस्ट एंड रनर्स, सेलीब्रिटी और मीडिया टीम प्रमुख रहीं. स्पॉन्सरशिप का काम अक्टूबर में शुरू कर दिया गया. कंपनियों के सीईओ और मैनेजर से मिलकर उन्हें अपने साथ जोड़ा गया. सभी टीमों ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी सम्हाली और आयोजन को सफल बनाने में जुट गईं.

**200** छात्रों ने किया दिन-रात एक (आईआईएम के)

**20** छात्रों की कोर टीम का सफल मैनेजमेंट

**150** छात्रों का मिला सहयोग (सात अन्य टीमों के)

### इनकी मेहनत से सफल आयोजन

मैराथन के सफल आयोजन के पीछे को-आर्डिनेटर रौनक़ चौधरी, हिमांशी शिवहरे, पवन एचके, केवल बोरिचा, क्षितिज चंद्राकर, जतिन मग्गू, नेहा समनोत्रा, अभिषेक श्रीवास्तव, राहुल कंजानी, प्रशांत पोकर्णा, मेखला के, अंजलि पाल, अमित कुमार, राजा रमेश, गौतम बालाजी, शिबेन जॉर्ज, सोमोदीप, सोनाली फाफले, शेखर सुमन, आदित्य प्रताप के अलावा आईआईएम के सभी छात्रों और गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज (जीईसी) के छात्र-छात्राओं का भी योगदान रहा.

धावकों के रवाना होते ही की युवाओं ने साफ-सफाई

रविवार को सुबह साढ़े 5 बजे था ऐसा नजारा

## नोटबंदी जैसी महिला सुरक्षा पर सख्ती हो : बबीता फोगाट

**कॉमनवेल्थ** गेम्स में देश को महिला कुश्ती में मैडल दिलाने वाली खिलाड़ी बबीता फोगाट का कहना है कि जिस प्रकार प्रधानमंत्री ने एक रात में ही नोटबंदी को सख्ती से लागू कराया, उसी प्रकार महिलाओं की सुरक्षा पर भी सख्त कानून बने तो देश में लड़कियां सुरक्षित हो जाएंगी. इसी असुरक्षा के चलते लड़कियों को जन्म से पहले ही गर्भ में मार दिया जाता है. यह नहीं होना चाहिए. दंगल फिल्म से सुर्खियों में आई इस खिलाड़ी ने कहा कि रियो ओलंपिक में आखिर देश का सम्मान बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु और रेसलर साक्षी मलिक ने ही बढ़ाया. क्या अगले ओलंपिक में वे देश के लिए खेलेंगी? इस प्रश्न पर उन्होंने कहा कि अपनी बहन गीता के साथ वे अभी से नियमित 3-3 घंटे अभ्यास में जुट चुकी है. निश्चित ही कॉमनवेल्थ की तरह ओलंपिक में देश के लिए पदक लेकर आएंगी.

## ओलंपिक में गोल्ड मिला तो मुझ पर भी फिल्म : दीपिका

**पड़ोसी** राज्य झारखंड की अर्जुन अवॉर्डी तीरंदाज दीपिका कुमारी ने कहा कि खेल में उत्कृष्टता के लिए एकेडमी और दक्ष कोच जरूरी है. इसके बिना आप अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार नहीं कर पाएंगे. दीपिका यहां आईआईएम द्वारा आयोजित मिनी मैराथन में बतौर अतिथि शामिल होने आई थीं. राजधानी में हुई सीनियर नेशनल तीरंदाजी में भाग लेने के बाद दूसरी बार रायपुर आई इस खिलाड़ी ने कहा कि यहां सब कुछ बदल चुका है इसलिए शासन को चाहिए कि वह खेल को प्रमोट करने के लिए एकेडमिक सुविधा पर अधिक ध्यान दें. ओलंपिक में खिलाड़ियों पर पड़ने वाले मैच प्रेशर पर उन्होंने बताया कि वे अभी से नियमित प्रैक्टिस पर आठ घंटे दे रही हैं. चक-दे-इंडिया, मैरीकॉम, भाग मिल्खा भाग, एमएस धोनी और अब दंगल जैसी खेल पर आधारित फिल्मों के बाद तीरंदाजी पर फिल्म को लेकर दीपिका ने कहा कि एक बार ओलंपिक में मैडल आ जाए तो फिल्म बन जाएगी.

## महिलाएं भी शामिल हुईं

मैराथन में महिलाओं ने भी उत्साह के साथ हिस्सा लिया. कुछ ने पंजीयन कराया था तो कई बिना पंजीयन के ही स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए दौड़ीं. पुष्पा सिंह ने बताया कि वे प्रोफेशनल स्पोर्ट्स वूमेन नहीं हैं किन्तु स्वास्थ्य के लिए रोजाना मार्निंग वॉक एवं एक्सरसाइज करती हैं. संगीता लालवानी ने बताया कि वे पंजीयन नहीं कराई पाई फिर भी उन्होंने कुछ किमी दौड़ लगाई.